VOL- VIII ISSUE- VIII AUGUST 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के प्रतिमानो के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Mrs. Ramandeep Kaur
Research Scholar,
Department of Education
Shri Khushal Das University
Near Toll Plaza, Suratgarh Road,
Hanumangarh (Raj.) – 335801

Dr. Gurmeet Singh
Assistant Professor
Department of Education
Shri Khushal Das University
Near Toll Plaza, Suratgarh Road,
Hanumangarh (Raj.) – 335801

प्रस्तावना :–

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक, पाषाणकाल से स्पूतनिक युग तक नारी, नर के जीवन का पोषण एवं उन्नयन करती रही हैं। आज तक अपनी ममता, वात्सल्य, त्याग, करूणा, कोमलता एवं मधुरता से पुरूष की कठोरता एवं रूक्षता को कम कर जीवन में एक स्निग्ध, अजस्त्र प्रेमधारा बहाने में अपूर्ण योग दिया हैं। यह सत्य हैं कि संघर्ष पुरूष की जीवन प्रेरणा शक्ति का प्रमाण रहा हैं, किन्तु विश्व का सामाजिक इतिहास बतलाता हैं कि पुरूष ने प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए किसी न किसी अंश में माता,बहिन,पत्नी, प्रेयसी आदि से किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा अवश्य प्राप्त की ही हैं।

ऑचल में दूध और आँखों में पानी, लिये त्यागमयी नारी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग रही हैं और यह स्पष्ट हैं कि हमारी आदिमकालीन गृहस्थी का शिला न्यास नारी की कोमलता के कर –कमलों द्वारा ही हुआ होगा, पुरूष की कठोरता की क्रेन द्वारा नहीं। महादेवी जी के शब्दों में – ''पुरूष को यदि ऐसे वृक्ष की उपमा दी जाय ,जो अपने चारों ओर के छोटे–छोटे पौधों का जीवन रस चूस–चूस कर आकाश की ओर बढ़ता जाता हैं तो स्त्री को ऐसी लता कहना होगा जो पृथ्वी से बहुत से अंकुरों को पनपाती हुई उस वृक्ष की विशालता को चारों ओर से ढ़क लेती हैं।...प्रकृति ने केवल उसके शरीर को ही अधिक सुकुमार नहीं बनाया, वरन् उसे मनुष्य की जननी का पद देकर उसके हृदय में अधिक संवेदना, आँखों में अधिक आर्द्रता तथा स्वभाव में अधिक कोमलता भर दी।'' अपनी रूक्षता के कारण पुरूष जहाँ प्रतिशोध लेता हैं, वहाँ नारी अपनी कोमलता के कारण क्षमाकर देती हैं। पुरूष जहाँ शोर्य का प्रतिरूप हैं, नारी वहाँ प्रेरणा की प्रतीक हैं।

''किसी भी मानव समाज में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं और कोई भी समाज इसे नजर अन्दाज नहीं कर सकता हैं। स्त्रियां राष्ट्र के विकास के लिए उतना ही महत्व रखती हैं। जितना महत्व उस देश के लिए खनिज पदार्थों, वहाँ की नदियों और वहाँ की खेती–बाड़ी का हैं। किसी भी देश के विकास संबंधी सूचकांक को निर्धारित करने के लिये उद्योग, व्यापार, खाद्यान्न उपलब्धता शिक्षा इत्यादि के स्तर के साथ–साथ उस देश की महिलाओं की स्थिति का भी अध्ययन किया जाता है। नारी की सुदृढ़ व सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मजबूत समाज की द्योतक है। जहां तक भारत देश का संबंध है यहां 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता' का सूत्र वाक्य पौराणिक काल से मान्य रहा है।

महिलाओं की स्थिति :–

महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के प्रतिमानो के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन विभिन्न काल के अनुसार विभाजित किया गया है जो निम्नानुसार है।

1.ऐतिहासिक काल मे महिलाओं की स्थिति :–

भारतीय समाज में नारी का महत्व प्रत्येक युग में बदलता रहा हैं। एक समय था जब नारी के महत्व को –

''यद् गृहैं रमते नारी लक्ष्मीस्तद् गृहवासिनी।
देवताः कोटिशों वत् न त्यजन्ति गृह हितत्।।''

कह कर प्रकट किया जाता था। वैदिककाल में स्त्रियों को पुरूषों के समान ही अधिकार एवं सम्मान प्राप्त था। शतपथ ब्राह्मण के एक वर्णन के अनुसार एक स्थान पर आया हैं कि

प्राचीन ऋषि जहाँ लड़कों को विद्वान बनाने के लिए प्रयत्न करते थे। वहाँ लड़कियों को भी विदुषी बनाते थे । इससे उस समय लोगों की स्त्रियों के प्रति क्या भावना थी। इस पर प्रकाश पड़ता हैं। इसी प्रकार मनुस्मृति में भी एक स्थान पर कहा हैं कि राजा का कर्त्तव्य हैं कि सब लड़कियों और लड़कों के लिए नियत समय तक ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने की व्यवस्था करे। इस प्रकार लड़कियों के वेदाध्ययन करने सम्बन्धित उल्लेख अथर्ववेद में भी मिलते हैं। इस समय की महत्वपूर्ण महिलाओं के नाम गार्गी मैत्रेयी, घोषा लोपा मुद्रा आदि हैं। उत्तर वैदिककाल में इस दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। स्त्रियों का समाज में स्थान पुरूषों के बराबर नहीं रहा । स्त्री शिक्षा के प्रति उपेक्षा की भावना आ गयी। विदुषी महिलाओं की परम्परा टूटने सी लगी। तभी से कुछ मुर्खता पूर्ण सूक्तियाँ भी चल पड़ी जैसे – स्त्री एवं शुद्र को नहीं पढ़ना चाहिए। इस प्रकार स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीनता बढ़ती हुई दिखाई देती हैं । उस समय समाज में दो ही वर्ग बने हुए थे – एक शासक वर्ग एवं उसके सम्बन्धी, दूसरा शासित वर्ग । इसमें सभी प्रकार के लोग सम्मिलित थे। अंग्रेजों के शासन काल में भी स्त्री शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया क्योंकि अंग्रेजों का स्त्रियों को पढ़ाने में कोई हित साधन नहीं था। उन्हें तो अपने स्वार्थ सिद्धी के लिए शिक्षा का प्रसार करना था। उन्हें भारतीय समाज के उत्थान से कोई सरोकार नहीं था। श्री एडम्स ने उस समय की शिक्षा का उल्लेख करते हुए लिखा हैं कि ''समस्त स्थापित शिक्षण संस्थायें पुरूषों के लाभार्थ हैं, समस्त महिला जगत अज्ञानता के अन्धकार में भटक रहा हैं।''

इसी अज्ञानता के कारण स्त्री की पुरूषों के साथ समानता का तो प्रश्न ही नहीं था, वरन् स्त्री को अत्यन्त निम्न एवं हैंय समझा जाता था। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं ''स्त्रियों को मद्रास में सन् 1876 से सन् 1882 तक ऐट्रेंस परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं थी। ''

2. आधुनिक काल में महिलओं की स्थिति :–

हमारे देश में अंग्रेजी शिक्षा ने एक राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। पढ़े–लिखे व्यक्तियों ने जब देश में समाज में महिलाओं की हीन दशा को देखा तो समाज सुधार की लहर सी फैली जिसने अनेक समाज सुधारको को जन्म दिया। इनमें प्रमुख राजा राममोहनराय एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। इन समाज सुधारकों ने इस बात को बहुत बल दिया कि समाज व देश की उन्नति तथा स्वतन्त्रता के लिए समाज के सम्पूर्ण वर्ग को जागृत करना होगा, जबकि समाज का आधा अंग अशिक्षा, हीनता की दशा में हैं, तब समाज की व देश की उन्नति सम्भव नहीं हो सकती। इसका प्रभाव यह पड़ा कि अनेक रूढ़ियों के विरोध में जनमत एकत्र हुआ। स्त्रियाँ स्वयं भी अपने अधिकारों के प्रति कुछ जागृत होने लगी। इसके परिणामस्वरूप नारी ने यत्र–तत्र अपनें शोर्य , कर्त्तव्यनिष्ठा , देशप्रेम, विद्वता आदि गुणों के उत्कृष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किये। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कालान्तर में कस्तूरबाँ गांधी, सरोजनी नायडू., स्वरूप रानी नेहरू, इन्दिरा गांधी आदि महिलाओं ने भारत को स्वतन्त्र करवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महात्मा गांधी और नेहरू जैसे उदार दृष्टिकोण वाले नेताओं ने स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में महिलाओं को राजनैतिक, सामजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयत्न किये।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में महिला जागरण का युग आरम्भ हुआ। हमारे संविधान निर्माताओं ने महिलाओं की घनिभूत पीड़ाओं को अनुभव किया और संविधान में महिला एवं पुरूष की समानता के पक्ष को प्रबल रूप में प्रस्तुत किया । सन् 1975 का वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया गया। भारत में भी महिलाओं में जागृति लाने के सुझावों एवं प्रयत्नों पर और अधिक बल दिया गया।

3. राजस्थान में महिलाओं की स्थिति :–

जिस समय देश में स्त्रियों की दशा के प्रति इतनी जागरूकता थी उस समय राजस्थान में तो यह स्थिति और भी अधिक शोचनीय थी। राजस्थान, उस समय का राजपूताना अलग–अलग रजवाड़ों में बँटा हुआ था। सामाजिक रूप एवं परम्परायें मुख्यत: राजपूती संस्कृति एवं सभ्यता की प्रतीक थी। यहाँ स्त्रियों को अत्यन्त हीन दृष्टि से देखा जाता था। इसके दो प्रमुख कारण थे – एक दहेज प्रथा, लड़की के जन्म के समय से ही उसे माता–पिता पर एक बोझ समझ जाता था। दुसरा राजपूत मान के धनी होते थे इसलिए यदि लड़की पैदा हुई तो उन्हें लड़की के विवाह के समय लड़की के ससुरालवालों के सम्मुख झुकना पड़ता था। अत: लड़की का जन्म ही अशुभ माना जाता था। कन्या को जन्म लेते ही मार दिया जाता था। यही परम्परा राजस्थान के सामान्य वर्ग में भी थी। लड़कों के जन्म के समय खुशियाँ मनायी जाती थी। वहाँ कन्या के जन्म पर घर में मातम सा छा जाता था। इसलिए यहाँ अनेक प्रकार की कहावतें भी प्रचलित हो गई हैं –

पेड़ो भलों न कोस को, बेटी भलों न एक।
देणों भलों न बाप को, साहिब राखे टेक।।

लड़कियों का विवाह बहुत कम उम्र में यहाँ तक कि पैदा होते ही कर दिया जाता हैं। बालक –बालिकाओं को याद भी नहीं रहता कि उनका विवाह कब, कैसे व किसके साथ हुआ हैं। विधवा स्त्रियों को घर में बड़ी अपमानजनक परिस्थितियों में जीवन बिताना पड़ता हैं।

ऐसी स्थिति का प्रमुख कारण यहाँ के आम लोगों की अशिक्षा था। आम लोगों के साथ–साथ यहाँ के उच्च वर्गीय व्यक्ति भी पढ़नें–लिखने में रूचि नहीं लेते थे। अशिक्षित होने के कारण उनके विचार भी समयानुकूल नही होते थे।

अत: राजस्थान में स्त्रियों की स्थिति अन्य राज्यों की अपेक्षा कही अधिक शोचनीय है। समाज के प्रत्येक वर्ग में महिलाओं की स्थिति दयनीय हैं। आज भी राजस्थान में महिलाओं की आम स्थिति में उतना परिवर्तन नहीं हुआ हैं, जितना कि अपेक्षित हैं। आज भी राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों में तथा निम्न वर्ग में नारी की वहीं स्थिति हैं जो आज से ५० वर्ष पहले थी । आज पढ़े–लिखे तथा सभ्य समझे जाने वाले समाज में भी कन्या का जन्म निराशा उत्पन्न करने वाला होता हैं। आज भी समाज लड़के –लड़कियों के पालन–पोषण में भेद–भाव करता हैं। महिलायें पुरूषों पर निर्भर रहती हैं तथा अपना व्यक्तिगत महत्व न मानकर पुरूष की अनुगामिनी समझती हैं।

यद्यपि राजस्थान के प्रमुख शहरों में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार हुआ हैं। महिलायें अनेक क्षेत्रों में आगे आ रही हैं तथा पुरूष के समान ही सामाजिक व आर्थिक महत्व रखने लगी हैं। यह प्रवृत्ति समाज के प्रत्येक वर्ग में देखने को मिलती हैं। यह मिश्रित स्थिति यह आवश्यकता उभारती हैं कि किसी तरह का ऐसा अध्ययन किया जाये जिसमें आज की साक्षर व असाक्षर महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति दृष्टिकोण का पता लग सके।

4. महिलाओं की सामाजिक स्थिति :–

नारी का घर और समाज इन्ही दो से विशेष सम्पर्क रहता हैं। परन्तु इन दोनों ही स्थानों पर उसकी स्थिति बहुत करूणाजनक हैं, इसके विचार मात्र से किसी भी सदृश्य का हृदय कांपे बिना नहीं रहता। आज भी उसे अपने पिता के घर में वैसा ही स्थान मिलता हैं जैसे कि दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता हैं जिसे रखने और बेचने दोनों ही दशा में दुकानदार को हानि की सम्भावना रहती हैं।

युगों से नारी का कार्यक्षेत्र घर में ही सीमित रहा , उसके कर्त्तव्य निर्धारित करने में उसका स्वभाव , कोमलता , मातृत्व ,संतान पालन आदि पर तो ध्यान रखा ही गया साथ ही बाहर के कठोर संघर्षमय वातावरण और परिस्थितियों ने भी समाज को ऐसा ही करने पर बाध्य किया।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद देश में परिवर्तन की जो प्रक्रिया चल रही हैं उसने नारी जीवन में क्रान्ति ला दी हैं । जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति बदले इस रूख के बारे में बताते हुए श्रीमती देसाई लिखती हैं – ''अब नारी को न मातृ बच्चा जनने की एक मशीन और न घर की एक दासी ही माना जाता हैं । उसने एक नया दर्जा एक नयी सामाजिक महत्ता प्राप्त कर ली हैं।''

इस विषय में एक अन्य अधिकृत विद्वान एन.सी.दुबे का कथन हैं – ''समकालीन भारतीय समाज में नारी का स्थान और उसकी भूमिका के बारे में परम्परागत मान्यतायें धीरे–धीरे बदल रही हैं, जिसके अब स्पष्ट संकेत मिलने लगे हैं, आधुनिक शिक्षा प्राप्ति के बढ़ते सुअवसर , बढ़ती भौगोलिक तथा नये आर्थिक ढ़ाँचों का उदय ही इस प्रवृति के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं।''

शोध की आवश्यकता :–

क्रियाकलाप समस्त प्रकट एवं अप्रकट व्यवहार के संघटक होते हैं। चूंकि किसी व्यक्ति के क्रियाकलाप उसके वैयक्तिक जीवन का केन्द्रभूत तत्व होते हैं तथा उनके विचारों , भावनाओं और व्यवहारों को निर्धारित करने में उनकी बहुत अहम भूमिका होती हैं। इसलिए यदि हमें सामाजिक परिवर्तन का या समाज किस दशा में आगे बढ़ रहा हैं इस बात का अध्ययन करना हैं तो व्यक्ति समूहों के क्रियाकलापों का और इससे भी अधिक क्रियाकलापों में हो रहे परिवर्तनों का परिचय प्राप्त करना परमावश्यक हैं। इन परिवर्तनों का महिलाओं पर भी प्रभाव पड़ता हैं क्योंकि महिलायें समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अत: इनमें सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के प्रति महिलाओं की अवधारणा को विभिन्न कालों के अनुसार ज्ञात करना परमावश्यक हैं। चूंकि अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के दृष्टिकोण पर कुछ शोध कार्य हुए हैं। लेकिन सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं पर शोध कार्य बहुत ही कम हुआ हैं। अत: शोधकर्त्री को महिलाओं का सामाजिक व आर्थिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन :–

किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए कथन अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। समस्या के अभिकथन का एक अर्थ शोध प्रबन्ध के शीर्षक का उल्लेख मात्र करना नहीं हैं। बल्कि

समस्या कथन का अभिकथन एक सुस्पष्ट लक्ष्य पर दृष्टि केन्द्रित करने का प्रयास करना हैं ।

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या का शीर्षक निम्नलिखित हैं –

''महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन''।

शोध के उद्देश्य :–

१. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
२. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
३. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक करना।
४. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
५. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें :–

१. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।
२. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।
३. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
४. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
५. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

न्यादर्श :–

व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शोधकार्यो में न्यादर्श का विशेष महत्व होता हैं। इसके बिना शोधकार्य को पुरा नहीं किया जा सकता हैं। न्यादर्श का तात्पर्य समग्र में से वान्छित चरों से युक्त निश्चित इकाईयों को चुनना हैं। आधुनिक समय में समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया हैं कि प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत सम्पर्क करना संभव नहीं होता हैं। किसी भी मनोवैज्ञानिक तथ्य या मानवीय व्यावहार के सत्यापन के लिए पूर्णतया या समग्र रूप से अध्ययन असंभव नहीं किन्तु कठिन अवश्य हैं। अत: अधिकांश: समस्याओं में न्यादर्श द्वारा कार्य सम्पन्न किया जाता हैं।

१. श्रीगंगानगर जिले की 100 महिलाओं का चयन न्यादर्श हेतु किया गया हैं।
२. श्रीगंगानगर जिले की साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का चयन किया गया हैं।
३. श्रीगंगानगर जिले की शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का चयन किया गया हैं।
४. 50 साक्षर एवं 50 असाक्षर महिलाओं का चयन किया गया हैं।

शोध का सीमांकन :–

१. प्रस्तुत शोधकार्य को श्रीगंगानगर जिले तक सीमित रखा गया हैं। जिसमें श्रीगंगानगर जिले की शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की 100 महिलाओं का चयन किया गया है।
२. प्रस्तुत शोधकार्य में 50 साक्षर एवं 50 असाक्षर महिलाओं का चयन किया गया हैं।

उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में दत्त संकलित करने हेतु डॉ. एस. राजाशेखर (अन्ना मल्लाई नगर) का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी :–

- मध्यमान,
- मानक विचलन
- एवं टी परीक्षण
- प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु 100 महिलाओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। इनमें से 50 साक्षर एवं 50 असाक्षर महिलाओं को सम्मिलित कर उनका मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य ज्ञात किया गया । जो निम्न सारणी में प्रदर्शित हैं।

सारणी संख्या 4.5

साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य

क्र. स.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
१	साक्षर	50	43.88	1.73	23.50	सार्थक
२	असाक्षर	50	25.60	5.42		

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त सारणी संख्या 4.5 में स्पष्ट हैं कि साक्षर महिलाओं का मध्यमान 43.88 एवं मानक विचलन 1.73 हैं। असाक्षर महिलाओं का मध्यमान 25.6 एवं मानक विचलन 5.42 हैं । दोनों वर्गो का टी.मूल्य 23.5 हैं। यह टी मान .05 स्तर पर सार्थकता को प्रदर्शित करता हैं।

साक्षर एवं असाक्षर महिला समूहों की सार्थकता स्तर जॉच से स्पष्ट होता हैं कि सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं अर्थात् शिक्षा ऐसा साधन हैं जिसका प्रभाव महिलाओं पर सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा में दृष्टिगोचर होता हैं । अर्थात् साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

अत: परिकल्पना (1.9.5) स्वीकृत की जाती हैं ।

सारणी संख्या 4.6

साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य

क्र. स.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
१	साक्षर	50	19.92	1.46	0.15	सार्थक
२	असाक्षर	50	19.88	1.33		

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

सारणी संख्या 4.6 में स्पष्ट हैं कि साक्षर महिलाओं का मध्यमान 19.92 एवं असाक्षर महिलाओं का मध्यमान 19.88 हैं तथा साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का मानक विचलन क्रमश: 1.46 एवं 1.33 हैं । दोनों वर्गो का टी. मूल्य ज्ञात किया। टी. मूल्य 0.15 प्राप्त हुआ । यह टी मूल्य .05 स्तर पर असार्थक है।

इससे स्पष्ट हैं कि साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं में धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अत: परिकल्पना (1.9.6) स्वीकृत की जाती हैं।

सारणी संख्या 4.7

साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य

क्र. स.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
१	साक्षर	50	17.44	0.98	13.89	सार्थक
२	असाक्षर	50	12.02	2.51		

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त सारणी संख्या 4.7 दर्शाती हैं कि साक्षर महिलाओं का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमश: 17.44 एवं 0.98 है जबकि असाक्षर महिलाओं का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमश: 12.02 एवं 2.51 है। दोनों वर्गों का टी. मूल्य 13.89 प्राप्त हुआ। यह मान .05 स्तर पर सार्थक हैं।

महिला समूहों में सार्थकता स्तर जांच से स्पष्ट हैं कि महिलाओं के आर्थिक दृष्टिकोण पर भी शिक्षा का काफी प्रभाव पड़ता हैं अर्थात् शिक्षा का प्रभाव महिलाओं के आर्थिक दृष्टिकोण पर स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होता हैं।

अत: परिकल्पना (1.9.7) अस्वीकृत की जाती हैं ।

सारणी संख्या 4.8

साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य

क्र. स.	समूह	संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
१	साक्षर	50	20.12	1.56	22.09	सार्थक
२	असाक्षर	50	10.40	2.70		

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

सारणी संख्या 4.8 में साक्षर व असाक्षर महिलाओं के राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन ज्ञात किया गया है। इससे स्पष्ट हैं कि साक्षर महिलाओं का मध्यमान 20.12 एवं मानक विचलन 1.56 है तथा असाक्षर महिलाओं का मध्यमान 10.4 एवं मानक विचलन 2.7 है। दोनों समूहों का टी. मूल्य 22.09 प्राप्त हुआ। यह टी मान .05 स्तर पर सार्थक है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता है।

अत: परिकल्पना (1.9.8) अस्वीकृत की जाती है।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

शोधकार्य एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो भविष्य में तीव्र गति से अग्रसर होगी। अत: भविष्य में इस संबंध में और भी अधिक अनुसंधान कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। भविष्य में किए जाने वाले शोधों के संबंध में कुछ सुझाव निम्न प्रकार हैं :–

१. इसी शोधकार्य को अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श पर किया जा सकता हैं ।

२. राजस्थान के अन्य जिलों की महिलाओं पर भी इस शोधकार्य को प्रशासित किया जा सकता है।

३. प्रस्तुत शोधकार्य को अनुसुचित जाति एवं अनुसुचित जनजाति की महिलाओं पर भी शोध कार्य प्रशासित किया जा सकता हैं ।

४. प्रस्तुत शोधकार्य को राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों की महिलाओं पर भी शोध कार्य प्रशासित किया जा सकता है।

५. ग्रामीण क्षेत्र की साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं ।

६. विभिन्न वर्गवार (उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय, निम्नवर्गीय) महिलाओं पर भी यह शोध कार्य किया जा सकता हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१ गहलोत जगदीश चंद्र राजस्थान का सामाजिक जीवन, देवेन्द्र गहलोत सन्चालक ,हिन्दी साहित्य मंदिर ,जोधपुर

२ चटोपाध्याय, कमलादेवी स्ट्रग्ल फॉर फ्रीड़म वीमेन ऑफ इण्ड़िया, चीफ एडिटर,तारा अलीबेग

३ पाण्डेय डॉ. विमलचंद्र भारत वर्ष का सामाजिक इतिहास

४ वाजपेयी एस.आर. सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण

५ आस्थाना, अग्रवाल विपिन मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन

६ जॉन डी.वी. (लेखक डॉ. शर्मा) शिक्षा तथा भारतीय समाज

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com